# शराब के खिलाफ़ सबलाओं का आंदोलन

कमला भसीन

हैदराबाद से ठीक सौ किलोमीटर दूर मेडक ज़िले का छोटा-सा शहर ज़हीराबाद औरतों की आवाजों से गूंज रहा था। लगभग डेढ़ हज़ार गरीब औरतें एक लंबे जुलूस में शामिल थीं। उनके सफ़ेद बैनर पर लिखा था: वेलुगू—मेडक ज़िला महिला संघ। वेलुगू का मतलब है रोशनी। साठ गांवों से पैदल या बसों से आई ये नाराज़ औरतें शराब के खिलाफ़ ज़ोर-ज़ोर से नारे लगा रही थीं।

**सारा (शराब) नहीं चाहिए**
**पानी चाहिए**
**सारा नहीं चाहिए**
**शिक्षा चाहिए**
**नशा नहीं चाहिए**
**खुशी चाहिए**

ज़हीराबाद शहर ने शायद पहली बार औरतों का इतना बड़ा जुलूस देखा था। इस ज़िले में काम कर रही एक स्वयंसेवी संस्था—डैकन डवेलपमेंट सोसाइटी ने इस जुलूस में थोड़ी मदद की थी लेकिन जुलूस निकालने की योजना गांव की औरतों की ही थी। ये सारी मज़दूर या किसान औरतें अपना काम, दिहाड़ी, घर छोड़ कर शराब पर हमला बोलने इसलिए निकलीं थीं क्योंकि शराब ने इन सब की जिंदगी हराम कर रखी है। ये औरतें सरकार से शराबबंदी की मांग कर रही थीं और साथ ही साथ अपने मर्दों को भी यह संदेश दे रही थीं कि उनकी शराबखोरी औरतें और नहीं सहेंगी। शराब के हाथों वो अपने जीवन को खत्म नहीं होने देंगी।

इस तरह के जुलूस और बैठकें पिछले तीन महीनों से आंध्र प्रदेश के सैकड़ों गांवों और शहरों में आयोजित किए गए हैं। कुछ ही महीनों में एक बड़ा आंदोलन खड़ा हो गया है। यह आंदोलन किसी नेता या पार्टी ने नहीं चलाया। आम औरतों ने इसे चलाया और आगे बढ़ाया है। हां, अब ज़रूर राजनैतिक दल और नेता इस आंदोलन से जुड़ रहे हैं। इस आंदोलन में स्वयंसेवी संस्थाएं जुड़ी हुई हैं। चित्तूर ज़िले की बहुत सारी संस्थाएं इस आंदोलन में मदद कर रही हैं। ये विकास संस्थाएं जानती हैं कि जब तक गरीबों का करोड़ों रुपया शराब में जाएगा, उनकी तरक्की नहीं हो सकती।

### कमरतोड़ गरीबी

शराब के खिलाफ़ इस आंदोलन के कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है कमरतोड़ गरीबी। औरतों का कहना है कि पिछले कुछ महीनों में मंहगाई

और बढ़ी है। राशन मंहगा हो गया है, राशन की मात्रा कम हो गई है। खुले बाज़ार में चावल के दाम बढ़ गए हैं। शराब की भी कीमतें बढ़ी हैं। इस मंहगाई में मर्दों का शराब पर खर्च करने का मतलब है परिवार का भूखों मरना।

औरतों पर होने वाली हिंसा भी पिछले वर्षों में बढ़ी है। हालांकि औरतों पर हिंसा सिर्फ़ शराबी ही नहीं करते, फिर भी शराबखोरी हिंसा को ज़रूर बढ़ावा देती है। शराब पी कर मर्द अपने बच्चों और अपनी पत्नी को अधिक मारते हैं।

एक औरत ने हमें बताया कि हैदराबाद शहर में 25 रुपये दिहाड़ी कमाने वाला एक मज़दूर दिन में 10-12 रुपये की शराब पी जाता है और 5-6 रुपये नमकीन या दो चार कबाब पर खर्च करता है। यानि दिन की कमाई का 75 फी सदी शराब पर लग जाता है। घर, परिवार के लिए कुछ बचता नहीं है। अधिकतर घर औरतों को चलाने पड़ते हैं। इधर-उधर जो काम मिल जाए, चाहे जितनी कम मज़दूरी पर मिले, वह करके औरतें अपने बच्चों, अपने शराबी पति और अपना पेट पालने पर मजबूर होती हैं। शराब पी कर जब मर्द घर लौटता है तो उसे खासी भूख लगी होती है। घर पर पूरा खाना होता नहीं है। तो बस वह बरसता है अपनी बीवी और बच्चों पर। लाखों घरों में रोज़ यही कुछ होता है।

## साक्षरता से शुरुआत

इस सब से तंग आ कर ही आंध्र प्रदेश की औरतें सड़कों पर निकली हैं। कहते हैं इस आंदोलन की शुरुआत आंध्र प्रदेश में चल रहे एक साक्षरता अभियान से हुई। साक्षरता की किताब में शराब के नुकसानों पर एक पाठ था जिसे पढ़कर औरतों में गुस्सा जागा। चूंकि साक्षरता अभियान के जरिए उनका संगम या समूह भी बन गया था उन्हें लगा कि अब वो अकेली नहीं है। सब मिलकर वो ज़रूर कुछ कर सकती हैं। नैलोर ज़िले में सबसे पहले औरतों ने शराब के खिलाफ़ जंग छेड़ी। जगह-जगह औरतों ने शराब के ठेकों और ठेकेदारों पर हमले किए। कई जगह उन्होंने अरक में आग लगाई। जिन जीपों में अरक भर कर जा रहा था, उन्हें रोका।

कई जगह औरतों के समूहों ने अरक की नीलामी नहीं होने दी। अफसरों को छुप कर नीलामी करनी पड़ी। औरतों के डर के मारे तेलंगाना ज़िले में पुलिस थाने में शराब बेची गई। लगभग 200 गांवों में अरक की बिक्री बंद हो गई है। जिन गांवों में अरक नहीं बिकती वहां शराबखोरी कम हो जाती है।

शराब के ठेकेदारों को संरक्षण देने वाले पुलिस अफ़सरों और कर अधिकारियों के खिलाफ़ भी कुछ समूहों ने प्रदर्शन किए। वैमपेन्ता नामक गांव में औरतों ने पांच शराबियों के बाल मूंड़े। तिरुपति में 300 औरतों ने अपने पतियों को अम्बेदकर साहब की मूर्ती के सामने शराब न पीने की क़सम खाने को मज़बूर किया। यानि यह आंदोलन आग की तरह फैला है।

## लड़ाई गरीबों की

सरकार, शराब के ठेकेदार और उनके साथ मिले पुलिस और दूसरे अफ़सर बौखलाए हुए हैं। आंध्र प्रदेश सरकार शराब की बिक्री पर लगे टैक्स से साल में 850 करोड़ रुपये कमाती है। शराब बेचने वाले रोज़ाना दो करोड़ रुपये कमाते हैं। यानि दिन में 20-25 करोड़ रुपये की शराब बिकती है। शराब के धंधे में कितनी धांधलियां हैं इसका अंदाज लगाना मुश्किल नहीं है। इस धंधे से फ़ायदा उठाने वालों की ताक़त भी बहुत है और पहुंच भी।

आंध्र प्रदेश की सबलाओं की हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी जिन्होंने इतने बड़े दुश्मन को ललकारा है। उन्होंने पूरे समाज को ललकारा है, शराब पर एक बार फिर से सोचने को। क्या हमारे देश का गरीब तबका शराब के नशे में झूलता रहेगा? क्या उसकी सारी कमाई शराब में बहेगी? क्या उनकी पूरी शक्ति यूं ही गंवाई जाएगी? क्या यह गरीब तबके को खामोश, बहका हुआ रखने की साजिश नहीं है? इस तबके को आज लड़ना चाहिए— गरीबी के खिलाफ़, मुनाफाखोरी के खिलाफ़, भ्रष्टाचार और अत्याचार के खिलाफ़।

आंध्र प्रदेश की गरीब, अनपढ़ लेकिन विदुषी औरतें न्याय मांग रही हैं। भूख, गरीबी, मारपीट से छुटकारा मांग रही हैं। लेकिन उनके नेता खामोश हैं, अपनी सत्ता के नशे में चूर हैं। उनके अपने घर के मर्द भी बहके हुए हैं या खामोश हैं। कैसी उलझी और मुश्किल लड़ाई है। यह लड़ाई एक तरह से पितृसत्ता के खिलाफ़ भी है। आंध्र प्रदेश की लाखों औरतें अपने मर्दों को भी ललकार रही हैं, इन्हें भी कह रही हैं बाज़ आने को, बुज़दिली छोड़ने को, शराब से अपने ग़म ग़लत करने की जगह अपनी समस्याओं का मुकाबला करने को।

औरतों का यह आंदोलन इस बात का भी सबूत है कि सामाजिक और आर्थिक बुराइयों को रोकने में वही लोग आगे आएंगे जिन पर इनका असर जानलेवा होता है। चूंकि शराब की मार (आर्थिक और शारीरिक दोनों) औरतों पर सब से ज़्यादा पड़ती है, वे अपनी पूरी ताक़त से शराब के खिलाफ़ लड़ रही हैं। जो लोग इस आंदोलन का साथ दे रहे हैं या देंगे वे ही समाज का हित चाहते हैं। जो इसके खिलाफ़ हैं या खामोश हैं वे गरीबी, शोषण, औरतों और बच्चों के दर्द को बढ़ावा दे रहे हैं। आज हर क्षेत्र में इस तरह के आंदोलन की ज़रूरत है। पैसे वालों की ताक़त के सामने यह आंदोलन अगर हारता है तो न्याय, हक़ और सच्चाई की हार होगी। □